New Association of Street Vendors of India (NASVI)

प्रेस विज्ञप्ति

नासवी ने मुख्यमंत्री, उपराज्यपाल एवं पुलिस को बताया - लॉक डाउन ने रेहड़ीवालों पर तबाही मचाई

पुलिस द्वारा उत्पीड़न / रिश्वत में कई गुना वृद्धि

सर्वेक्षित रेहड़ी वालों को शीघ्र 6000 रु स्थान्तरित किये जाय

दिल्ली 26 अप्रैल 2021; नेशनल एसोसिएशन ऑफ स्ट्रीट वेंडर्स ऑफ इंडिया (NASVI) ने श्री अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर बताया है की दिल्ली में लॉकडाउन के आपके निर्णय के परिणामस्वरूप पुलिस रेहड़ी वालों पर कहर ढा रही है। जब सब्जी और फलों को आवश्यक सेवाओं में शामिल किया गया है, तो भी बीट कांस्टेबल से लेकर एसएचओ तक, सभी रेहड़ी वालों के जैसे मालिक बन बैठे है, प्रत्येक बाजार को बंद करने, बाजारों का समय तय करने और विक्रेता के लिए अजीब मानदंडों को लागू किया जा रहा है । इस कठिन समय में रिश्वत भी बढ़ी है। इसलिए हम आपसे आग्रह करते हैं कि

- पुलिस उत्पीड़न के संबंध में रेहड़ी वालों से स्वम सच्चाई का सत्यापन करें और पुलिस आयुक्त से स्थानीय पुलिस को एक निर्देश जारी करवाए | यह स्पष्ट होना चाहिए कि पुलिस, स्ट्रीट वेंडिंग में कब हस्तक्षेप कर सकती है| आनंद विहार टर्मिनल, गाजीपुर मंडी, ओखला आदि में स्थिति अधिक गंभीर है।
- सब्जी और फलों के विक्रेताओं के अलावा, अन्य रेहड़ी वालें एक अनिश्चित स्थिति में हैं क्योंकि उनकी आजीविका लॉकडाउन में बंद है। जैसा कि दिल्ली सरकार द्वारा नियुक्त एजेंसियों द्वारा 60,000 विक्रेताओं का सर्वेक्षण किया गया है, उन्हें अपने खाते में तुरंत 6,000 रुपये दिए जाने चाहिए ताकि वे अपने परिवार को भोजन करवा सकें और कर्ज के जाल में न फंसे।
- लॉकडाउन के दौरान खाद्य विक्रेताओं को अपना व्यवसाय करने की अनुमति दें क्योंकि बड़ी संख्या में लोग सस्ते भोजन के लिए उन पर ही निर्भर हैं

हम अपनी ओर से FSSAI के FOSTAC के तहत खाद्य विक्रेताओं को प्रशिक्षित कर रहे हैं और रेहड़ीवालों की स्थितियों को सुधारने के लिए हर संभव मदद करने को भी तैयार हैं | नासवी ने इस आशय से सम्बंधित पत्र उपराज्यपाल एवं पुलिस आयुक्त को भी लिखा है|

धन्यवाद्

Arbind Singh

अरबिंद सिंह
राष्ट्रीय समन्वयक
9910306625

Administrative Office :Plot No.-4, Office No.-102, New Rajdhani Enclave, Vikas Marg, Delhi – 110092Tel. : 011 – 4755 3013
E-mail : office@nasvinet.org, Website : www.nasvinet.org